www.thearyasamaj.org

ओ३म्

प्रकाशन की तिथि 01.10.2016

एक प्रति मूल्य : रु० 4.00

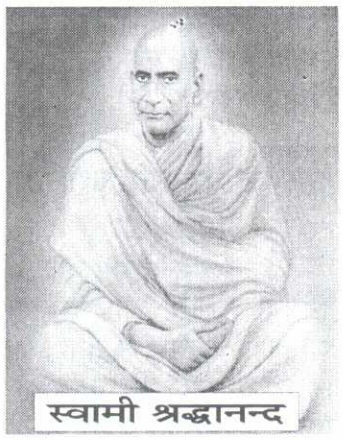
स्वामी श्रद्धानन्द

शुद्धि समाचार

सन् 1923 में स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा का मासिक मुखपत्र

पं. मदनमोहन मालवीय

माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः । अथर्ववेद 12.1.12
भूमि मेरी माता है और मैं उस मातृभूमि का पुत्र हूँ।

वर्ष 39 अंक 10

"शुद्धि ही हिन्दू जाति का जीवन है"

वार्षिक शुल्क : 50 रुपये
आजीवन शुल्क : 300 रुपये

अक्तूबर 2016 विक्रम सम्वत् 2073 आश्विन-कार्तिक

सनातन धर्मी नेता - पं. मदनमोहन मालवीय

दूरभाष : 011-23857244

परामर्शदाता : श्री हरबंस लाल कोहली ❁ श्री चतर सिंह नागर ❁ श्री विजय गुप्त ❁ श्री सुरेन्द्र गुप्त ❁ प्रबन्धक : श्री नरेन्द्र मोहन वलेचा

'अक्तूबर मास के पर्व और महापुरुषों की जयन्तियां'

—मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।

अक्तूबर, 2016 माह में अनेक पर्व व जयन्तियां पड़ रही हैं। जयन्तियों में वीर हनुमान, महर्षि बाल्मीकि, ऋषि धनवन्तरी, गांधी जी और लाल बहादुर शास्त्री जी सम्मिलित हैं वहीं पर्वों में विजयादशमी, दीपावली, ऋषि दयानन्द बलिदान दिवस एवं गोवर्धन पूजा सम्मिलित हैं। इस अवसर पर हम कुछ चर्चा सभी जयन्तियों व पर्वों की करना उचित समझते हैं। मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम चन्द्र जी के अनन्य भक्त वीर ब्रह्मचारी हनुमान जी से हम चर्चा आरम्भ करते हैं जिनकी कार्तिक कृष्ण 14 अर्थात् 29 अक्तूबर, 2016 को जयन्ती है।

श्री हनुमान जयन्ती (कार्तिक कृष्ण 14 तदनुसार 16 अक्तूबर 2016)

वीर हनुमान जी रामायणकाल में माता अंजनी एवं पिता पवन से उत्पन्न हुए थे। रामायण काल वैदिक काल के अन्तर्गत आता जब सर्वत्र वेद की शिक्षाओं के आधार पर देश व समाज की व्यवस्थायें चलती थीं। वैदिक मान्यताओं पर आधारित गुरुकुलीय शिक्षा प्राप्त कर ही हनुमान जी का जीवन व चरित्र निर्मित हुआ था। आप संस्कृत भाषा के भी धुरन्धर विद्वान थे जिसका प्रमाण स्वयं श्री रामचन्द्र जी हैं। उन्होंने लक्ष्मण जी को कहा था कि हनुमान जी से उनका जो वार्तालाप हुआ उसमें हनुमान जी ने संस्कृत बोलने में व्याकरण की एक भी भूल वा अशुद्धि नहीं की। इससे यह भी ज्ञात होता है कि हनुमान जी वेदों व वैदिक साहित्य के भी पूर्ण ज्ञानी थे जैसे कि 133–191 वर्ष पूर्व महर्षि दयानन्द जी हुए हैं। हनुमान जी ने सारा जीवन सबसे कठोर व्रत ब्रह्मचर्य का पालन कर एक अपूर्व उदाहरण प्रस्तुत किया है और इस व्रत की शक्ति से अपूर्व कार्य सिद्ध किये जो बड़े–बड़े बुद्धिमान व बलवान भी नहीं कर सकते। उनका शरीर वज्र के समान कठोर व बलवान था इसलिए उनका एक नाम बजरंगबली भी है। मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र जी अपने समय के आदर्श महापुरुष थे। उनको आपने अपना स्वामी, आदर्श व प्रेरक स्वीकार किया। इन दोनों महान व्यक्तियों ने मिलकर संसार में अद्वितीय ऐतिहासिक कार्य कर एक अपूर्व उदाहरण प्रस्तुत किया है। राम–रावण युद्ध में जहां श्री रामचन्द्र जी व उनके अनेक सहयोगियों भाई लक्ष्मण, सुग्रीव, अंगद आदि का मुख्य स्थान है, वहीं हमारी दृष्टि में राम के बाद युद्ध में श्री रामचन्द्रजी को विजय दिलाने में हनुमान जी की मुख्य भूमिका रही है। माता सीता जी की खोज भी उनका एक ऐसा कार्य है जिसकी जितनी प्रशंसा की जाये कम है। समुद्र पार कर उनके द्वारा लंका पहुंचना एक चमत्कार से कम नहीं है। आज हम नहीं जान सकते कि वह लंका कैसे गये होंगे। समुद्र पार कर लंका जाने के दो ही मार्ग थे, प्रथम जल मार्ग से नाव व जलयान का उपयोग कर वहां पहुंचना और दूसरा वायुमार्ग से किसी वायु यान से जाना। हमें लगता है कि इन दोनों में से किसी एक मार्ग का ही उपयोग हनुमान जी ने लंका पहुंचने के लिए किया होगा। रावण के दरबार में जाकर उसे श्री रामचन्द्र जी का सन्देश सुनाना, माता सीता से मिलना व उन्हें आश्वस्त करने के साथ अपना प्रयोजन पूरा कर सकुशल श्रीरामचन्द्र जी के पास लौट आना भी उन्हें एक अद्भुद योद्धा व महाप्रज्ञ सिद्ध करते हैं। यह भी एक प्रकार से रावण की पराजय ही थी। ऐसे अनेकों अद्भुत कार्य हनुमान जी ने किये। श्री हनुमान जी का जीवन चरित जानने के लिए महात्मा प्रेमभिक्षु जी द्वारा लिखित श्री हनुमतचरित का अध्ययन उपयोगी है। श्री हनुमान जयन्ती पर उन्हें सश्रद्ध श्रद्धांजलि।

विजय दशमी एवं प्रकाश पर्व दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएँ

महर्षि बाल्मीकि जयन्ती (आश्विन शुक्ल पूर्णिमा तदनुसार 16–10–2016)

महर्षि बाल्मीकि संस्कृत रामायण महाकाव्य के प्रणेता व रचयिता हैं। इस ग्रन्थ में उन्होंने अपने समकालीन राजा दशरथ के पुत्र श्री रामचन्द्र जी के यथार्थ जीवन का ऐतिहासिक दृष्टिकोण रखते हुए चरित्र चित्रण किया है। त्रेतायुग में घटी यह घटना प्राचीनता की दृष्टि से द्वापर युग की कुल अवधि 8.64 लाख वर्ष से भी कहीं अधिक पुरानी है। इस लम्बी अवधि में इस रामायण ग्रन्थ में अनेक प्रक्षेप हुए हैं जिससे इसमें कुछ वैदिक मान्यताओं के विरुद्ध प्रसंग भी आ गये हैं। यह जानने योग्य है कि महर्शि बाल्मीकि जी एक ऋषि थे। ऋषि वह होता है जो वेदों का पूर्ण ज्ञानी व ईश्वर भक्त योगी हो। रामायण का प्रणयन उन्होंने श्री रामचन्द्र जी को ईश्वर व उसका अवतार मानकर नहीं अपितु एक आदर्श महापुरुष और मर्यादा पुरुषोत्तम मानकर किया है और यह भी तथ्य है कि रामायण प्राचीन व अर्वाचीन अन्य काव्यों की तरह का काव्य न होकर इतिहास है जिसकी प्रत्येक घटना सत्य एवं तथ्यपूर्ण है। बाल्मीकि जी के जीवन के बारे में अनेक किंवदन्तियां प्रचलित हैं परन्तु वह सब कपोल कल्पित प्रतीत होती हैं। महर्षि बाल्मीकि के समय गुण–कर्म–स्वभावानुसार वैदिक वर्ण व्यवस्था प्रचलित थी। जन्मना जाति व्यवस्था का प्रचलन आज से 2–3 हजार वर्ष पूर्व मध्यकाल में हुआ है। इस दृष्टि से हमें लगता है कि महर्षि बाल्मीकि जी की आयु के प्रथम लगभग 25 वर्ष अपने माता–पिता व परिवार के साथ एवं गुरुकुल में विद्याध्ययन में व्यतीत हुए होंगे और उसके बाद विवेक व वैराग्य होने के कारण उन्होंने संन्यास लेकर किसी वन में अपना आश्रम बनाया था। वहां उन्होंने ईश्वरभक्ति, उपासना व स्वाध्याय आदि के बल पर संस्कृत में काव्य लेखन की योग्यता अर्जित की और अपने व्यक्तित्व के अनुरुप उस समय के आदर्श महापुरुष मर्यादा पुरुषोत्तम राम का उनके यथार्थ व्यक्तित्व के अनुरुप काव्यमय जीवनचरित रचा। यह कार्य करके उन्होंने न केवल श्री रामचन्द्र जी को अमर कर दिया अपितु उनके साथ वह स्वयं भी अमर हैं। यहां हमें इस बात से दुःख होता है कि महर्षि बाल्मीकि जी का जैसा महान व्यक्तित्व व कृतित्व है, हमारा पौराणिक समाज उन्हें उसके अनुरुप आदर व सम्मान नहीं देता। पौराणिक समाज व उसके नेताओं ने बाल्मीकि जी का उचित मूल्यांकन नहीं किया और न पौराणिक जनता ही ऐसा कर पाई। बाल्मीकि रामायण की रचना

www.thearyasamaj.org

कर उन्होंने अपनी उस प्रतिभा का परिचय दिया जो लाखों व करोड़ों में किसी एक दो व्यक्तियों में ही होती है। इस कारण सभी आर्य–हिन्दू सन्तानें उनकी ऋणी हैं। बाल्मीकि जयन्ती के अवसर पर हम उन्हें सश्रद्ध स्मरण करते हैं और विद्वानों से निवेदन करते हैं कि अन्य पूज्य धार्मिक महापुरुषों के समान ही वैदिक विधि से उनकी जयन्ती का पर्व मनाया जाया करे।

घनवंतरी जयन्ती (कार्तिक कृष्ण 13 तदनुसार 28–10–2016)

आचार्य व ऋषि धनवंतरी जी शरीर के प्रायः सभी रोगों के चिकित्सक थे। आयुर्वेद के विकास व उन्नति में उनका विशेष योगदान था। आपने व आपके शिष्य सुश्रुत ने औषधि चिकित्सा और शल्य चिकित्सा में विशेष उन्नति की थी। चरक व सुश्रुत आयुर्वेद चिकित्सा के प्रमुख ग्रन्थ है जिसमें ऋषि धनवन्तरी जी का भी गौरवपूर्ण योगदान है। इनके विषय में पुराणों में अनेक अविश्वसनीय कथायें हैं। धनवंतरी जयन्ती के शुभ अवसर पर इनको स्मरण कर आयुर्वेद का यथाशक्ति अध्ययन कर इससे स्वयं और दूसरों को लाभ पहुंचाने की प्रेरणा लेनी चाहिये। हम ऐसे महापुरुषों के प्रति जितने कृतज्ञ होंगे उतने ही हम गुणग्राही व जीवन–उन्नत होंगे।

गोवर्धन पूजा (दिनांक 31–10–2016)

गोवर्धन पूजा गाय के उपकारों को स्मरण कर इस दिन गोसंवर्धन के उपायों पर विचार व निर्णय करने का दिन है जो न केवल व्यक्तिगत स्तर अपितु राष्ट्रीय स्तर पर सामूहिक रूप में भी आयोजित किये जाने चाहिये। इस अवसर पर गाय से

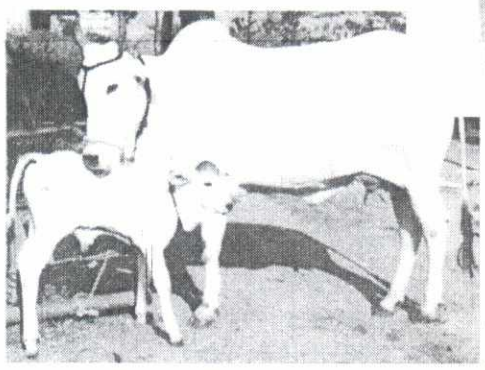

मनुष्यों को होने वाले लाभों पर विचार कर उसके संवर्धन व रक्षा पर ध्यान दिया जाना चाहिये। गोदुग्ध व उससे प्राप्त होने वाले सभी पदार्थ अमृत के समान हैं जिसका धन की दृष्टि से मूल्याकंन नहीं किया जा सकता। गो से मिलने वाले पदार्थ व गाय अनमोल है। गोसेवा से मनुष्य का इललोक व परलोक सुधरता है। इद्रलोक में स्वास्थ्य, आरोग्य, रोगनिवारण, बलवृद्धि, बुद्धिवृद्धि, आलस्यत्याग, पुरुषार्थ प्रेरणा, लोकोपकार आदि नाना लाभ होते हैं व प्रेरणायें मिलती है। गायों के प्रति सभी प्रकार की हिंसा बन्द होनी चाहिये। गोहत्या व राष्ट्र–हत्या दोनों पर्याय हैं। इसी प्रकार गोरक्षा से राष्ट्र रक्षित होता है। गाय पर्यावरण संरक्षण में भी सहायक है। गाय के गोबर से बनने वाली खाद सर्वोत्तम खाद है जिससे उत्पन्न खाद्यान्न से मनुष्य का शरीर स्वस्थ, निरोग व बलिष्ठ होता है व बुद्धि ज्ञान से सम्पन्न होती है। महर्षि दयानन्द ने गोरक्षा से सम्बन्धित **'गोकरुणानिधि'** एक अत्यन्त महत्वपूर्ण पुस्तक लिखी है जिसमे गोपालन से भौतिक व आार्थिक लाभों का वर्णन भी किया गया है। पं. प्रकाशवीर शास्त्री जी की पुस्तक **'गो हत्या राष्ट्र हत्या'** तथा मेहता जैमिनी जी की पुस्तक **'गोमाता विश्व की प्राणदाता'** विशेश रूप से पठनीय हैं। गोवर्धन पूजा पर्व के दिन हमें गोसेवा, गोरक्षा की प्रतिज्ञा लेने के साथ विषेष यज्ञ कर ईश्वर से इन उद्देष्यों की पूर्ति में सहायता की मांग करनी चाहिये और गोसेवा विषयक साहित्य का अध्ययन व वाचन करना चाहिये।

विजयादशमी पर्व (आश्विन शुक्ल दशमी वा 11–10–2016)

भारतीय वैदिक धर्म व संस्कृति वेदों पर आधारित है जिसमें गुण–कर्म–स्वभाव के अनुसार वर्ण व्यवस्था प्रचलित थी। विजया दशमी मुख्यतः क्षत्रियों का पर्व है परन्तु समाज के सभी वर्गों द्वारा इसे प्रीतिपूर्वक मनाया जाता है। यह पर्व मनुष्य को अधर्म छोड़ने व धर्म पारायण बनने की प्रेरणा देने के लिए आरम्भ किया गया प्रतीत होता है। इस पर्व के दिन क्षत्रियों को अपने कर्तव्यों पर विचार कर यह देखना होता है कि क्या वह अपने कर्तव्यों का भलीभांति पालन कर रहे हैं अथवा नहीं? इस दिन क्षत्रियों व अन्यों को भी विद्वानों की संगति कर उनसे अपने कर्तव्यों पर प्रेरक प्रवचन भी सुनने चाहिये और विषेष वैदिक यज्ञ करके इस पर्व को मनाना चाहिये। देशों की सरकारें इस अवसर पर अपने देश की सीमाओं व पड़ोसी देशों के व्यवहार सहित अपनी रक्षा तैयारियों की समीक्षा कर सकती हैं। आजकल विजयादषमी पर अनेक मिथ्या प्रथायें भी प्रचलित हो गई हैं। ऐसी जो प्रथायें अनावश्यक व अलाभकारी हैं, उन्हें छोड़ना व देश, काल व परिस्थितियों के अनुसार नई प्रथाओं व परम्पराओं का शुभारम्भ भी किया जाना चाहिये। अवैदिक प्रथायें जिसमें पशु हिंसा आदि की जाती हैं वह सर्वथा बन्द होनी चाहियें। ईश्वर ने मनुष्य को शाकाहारी प्राणी बनाया है। हाथी व घोड़े भी शाकाहारी प्राणी हैं तथापि इनमें बल की मात्रा इतर अनेक हिंस्र पशुओं से अधिक होती है और यह मनुष्य समाज के लिए उपयोगी भी होते हैं। हमें लगता है कि इस दिन मांसाहारियों को मांस व मदिरा सहित अन्याय, अत्याचार व अधर्म छोड़ने की प्रतिज्ञा, व्रत व संकल्प भी लेना चाहिये। यहां यह भी स्पष्ट कर दें कि श्री रामचन्द्र जी ने रावण का वध विजयादशमी के दिन नहीं किया था। यह बाल्मीकि रामायण में उपलब्ध विवरण से पुष्ट नहीं है। हां, यदि इस दिवस को अधर्म पर धर्म की विजय के रूप में मनाते हैं तो इमें कुछ अनुपयुक्त नहीं है परन्तु इसके अनुरूप हमारी भावना का होना व इसके अनुरुप भावी जीवन को बनाने पर अवश्य विचार करना चाहिये।

लालबहादुर भाास्त्री जयन्ती (2 अक्तूबर)

2 अक्तूबर देश के पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय लाल बहादुर शास्त्री जी का भी जन्म दिवस है। वह एक साधारण परिवार में जन्में और अपने गुणों व योग्यता के कारण प्रधानमंत्री बने। उन्होंने अपने जीवन में अनेक कष्ट सहे। पिता का साया उनके सिर से बचपन में ही उठ चुका था। पैसे न होने के कारण उन्हें नदी में तैर गर स्कूल जाना पड़ता था। देश की आजादी के लिए वह अनेक बार जेल भी गये। उन्होंने देश के लिए सत्य, त्याग व ईमानदारी की जो मिसाल कायम की उसके कारण वह देशभक्त नागरिकों के सदा आदरणीय एवं पूज्य रहेंगे। सन् 1965 में भारत–पाक युद्ध में उनके नेतृत्व में भारत को विजय मिली। उनका दिया नारा **'जय जवान जय किसान'** आज भी कानों में गूंजता है। देश में अन्न संकट होने पर उन्होंने देशवासियों को एक दिन एक समय का उपवास कर अन्न बचाने का आह्वान किया जिसका उन्होंने स्वयं पालन किया व देशवासियों ने भी किया। उन दिनों उपवास के दिन मध्यान्ह में सभी होटल आदि बंद रहते थे और कोई भोजन नहीं करता था। उनका जीवन प्रायः आदर्श जीवन है। उनकी जयन्ती पर हम उनके सभी अच्छे कार्यों के लिए अपनी श्रद्धांजलि देते हैं।

अक्तूबर, 16 मास की जयन्ती व पर्वों पर हमने संक्षेप में अपने विचार प्रस्तुत किये हैं। दीपावली एवं ऋषि दयानन्द बलिदान पर्व परएक पृथक लेख प्रस्तुत करने का हमारा विचार है। पाठकों को पसन्द यह संक्षिप्त लेख पसन्द आता है तो हमारा इन पंक्तियों को प्रस्तुत करना सार्थक होगा।

फोन:09412985121

अपील

दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल का 11वाँ वार्षिक अधिवेशन, 11 सितम्बर 2016 को आर्य समाज मस्जिद मोठ नई दिल्ली में आयोजित किया गया, जिसमें शुद्धि सभा के संरक्षक श्री हरबंसलाल कोहली तथा महामंत्री श्री नरेन्द्र मोहन वलेचा भी सम्मिलित हुए। शुद्धि सभा के कार्यकारी प्रधान श्री चतर सिंह नागर जी ने दक्षिण दिल्ली की विभिन्न आर्य समाजों के, अधिकारी जो इस अधिवेशन में मौजूद थे, से निवेदन किया कि वह "शुद्धि समाचार" मासिक के प्रकाशन व्यय रु. 8000/– आठ हजार की राशि भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा को प्रदान करें। यह राशि प्रदान करने वाली आर्य समाजों के तीन अधिकारियों (प्रधान, मंत्री और कोषाध्यक्ष) का आजीवन शुल्क इस राशि में ही सम्मिलित होगा। श्री नागर जी के इस निवेदन पर अधिकांश आर्य समाजों ने इस प्रस्ताव को स्वीकार किया।

– सुरेन्द्र गुप्त–कोषाध्यक्ष

www.thearyasamaj.org

"दीपावली आत्मा के प्रकाश का त्योहार है"

– डा0 जगदीश गांधी, प्रसिद्ध शिक्षाविद् एवं
संस्थापक–प्रबन्धक, सिटी मोन्टेसरी स्कूल, लखनऊ

(1) दीपावली का पर्व हमें अपने अन्दर आत्मा का प्रकाश धारण करने की प्रेरणा देता है :–

भारत के सबसे महत्त्वपूर्ण त्योहारों में से एक "दीपावली" प्रकाश पर्व के रूप में मनाया जाता है। विश्व के अलग–अलग देशों में रहने वाले प्रवासी भारतीय भी इस पर्व को प्रकाश पर्व के रूप में धूमधाम से मनाते हैं। ईश्वर की कृपा से आप सबके लिए दीपावली तथा भाई–दूज का पर्व मंगलमय हो! दीपावली मनाते समय हमारा हृदय निर्मल, मन प्रसन्न, चित्त शांत, शरीर स्वस्थ एवं अहंकार 'शून्य' हो, ऐसी ही अनुनय विनय है। भाई–बहिन के पवित्र प्रेम तथा आत्मीयता में वृद्धि हो। त्रेता युग में अयोध्या के राजा दशरथ के ज्येष्ठ पुत्र "मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम" जब पिता की वचन–पूर्ति के लिए चौदह वर्ष का वनवास पूरा करके तथा अहंकारी रावण का वध करके अपनी पत्नी सीता जी एवं अनुज लक्ष्मण के साथ अयोध्या लौटे तो नगरवासियों ने उनके स्वागत के लिए, अपनी खुशी प्रदर्शित करने के लिए तथा अमावस्या की रात्रि को भी उजाले से भरने के लिए दीपक जलाये थे। दीपावली को आलोक पर्व के रूप में मनाया जाता है। यह प्रकाश पर्व मर्यादापुरूषोत्तम श्रीराम की शिक्षाओं को जानने तथा उन शिक्षाओं पर चलकर आत्मा का जीवन जीने की प्रेरणा देता है। दीपावली मात्र एक पर्व अथवा त्योहार नहीं है, अपितु यह हमें अपने अंदर आत्मा का प्रकाश धारण करने की प्रेरणा देता है। जैन धर्म के अनुयायिओं का मत है कि दीपावली के ही दिन महावीर स्वामी जी को निर्वाण मिला था। सिक्ख धर्म को मनाने वाले कहते हैं कि इसी दिन उनके छठे गुरू श्री हर गोविन्द सिंह जी को जेल से रिहा किया गया था।

(2) परिवार की एकता ही विश्व एकता की आधारशिला है :–

वनवास के मध्य ही लंका का राजा रावण श्री राम की पत्नी सीता जी का हरण करके उन्हें लंका ले गया था और तब हनुमान, अंगद, सुग्रीव, जामवंत एवं विशाल वानर सेना के सहयोग से समुद्र पर सेतु–निर्माण कर तथा सोने की लंका पर आक्रमण करके उन्होंने रावण जैसे आततायी का वध कर धर्म तथा मर्यादित समाज की स्थापना धरती पर की थी। इसके अलावा सम्पूर्ण मानव जाति को यह संदेश दिया कि "आतंक चाहे कितना भी सिर उठाने की कोशिश करे तो भी उसका अंत निश्चित है" और "बुराई पर अच्छाई सदा भारी हुआ करती है। "इस स्मृति में हर वर्ष दशहरा मनाया जाता है जो "विजय दशमी" के नाम से भी विख्यात है और दशहरे के लगभग बीस दिन बाद ही दीपावली आती है। श्रीराम ने राम राज्य की स्थापना जादू की छड़ी घुमाकर नहीं कर दी। राम ने अपने पूरे जीवन भर अनेक कष्ट उठाकर मर्यादाओं का पालन करते हुए राम राज्य की स्थापना की। राम राज्य के मायने अयोध्या के राजा राम का राज्य नहीं वरन् सारे संसार में आध्यात्मिक साम्राज्य स्थापित करना है। ऐसे राज्य में नगर, घर, खेत, खलियान गांव, बाग, नदी, गुफा, घाटी, गली सभी जगहें ईश्वरीय आलोक से भर जाते हैं। एक ऐसा राम राज्य जहाँ किसी को भी शारीरिक, दैविक तथा भौतिक किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होगा। हमारा मानना है कि परिवार की एकता समाज की आधारशिला है। अतः हमें भी श्रीराम के जीवन से प्रेरणा लेकर अपने परिवार के सदस्यों के बीच एकता स्थापित करने का हर कीमत पर प्रयत्न करना चाहिए।

(3) स्वच्छता, स्वास्थ्य तथा आरोग्य के लिए योगमय जीवन जीने की प्रेरणा का पर्व है :–

यह त्योहार सारे भारत में अत्यंत हर्षोल्लास के साथ कार्तिक मास की अमावस्या पर तीन दिनों तक मनाया जाता है। अमावस्या से दो दिन पहले का दिन 'धनतेरस' के रूप में मनाया जाता है। जिसका सन्देश है आरोग्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। दरअसल, इस दिन भगवान् धन्वन्तरी जी का प्रागट्य हुआ था जो सबको आरोग्य देते हैं लेकिन कालांतर में यह दिन कोई न कोई नया बर्तन, सोना ,चांदी आदि खरीदने के रूप में विख्यात हो गया। इस दिन तुलसी के पेड़ के पास या घर के द्वार पर दीपक जलाया जाता है। तत्पश्चात् अगला दिन चतुर्दशी– 'नरक–चतुर्दशी' या छोटी दीपावली के नाम से प्रसिद्ध है। कहते है कि इस दिन भगवान् श्रीकृष्ण ने महाआतंकी नरकासुर नाम के दैत्य का वध किया था। दीपावली के लगभग एक माह पूर्व से घरों में स्वच्छता, पुताई, रंग–रोगन एवं साफ–सफाई पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

(4) ईश्वरीय आलोक को सारे संसार में फैलाने का पर्व है दीपावली :–

दीपावली के दिन लक्ष्मी जी एवं गणेश जी का पूजन अत्यंत श्रद्धा एवं आस्था के साथ किया जाता है। तरह–तरह के व्यंजन एवं खील–बताशों से उन्हें भोग लगाया जाता है। पकवान तो इतने बनाये जाते हैं कि जैसे माँ अन्नपूर्णा ने अपने भंडार ही खोल दिए हों। रंग–बिरंगी 'रंगोली' हर द्वार की शोभा में चार चाँद लगाती हैं। सब लोग नये वस्त्र पहनते हैं। अपने रिश्तेदारों एवं मित्रों को शुभ–कामनाएं एवं उपहार देते हैं, मिठाई खिलाते हैं। दीपावली–पूजन के साथ ही व्यापारी नये बही–खाते प्रारम्भ करते हैं और अपनी दुकानों, फैक्ट्री, दफ्तर आदि में भी लक्ष्मी–पूजन का आयोजन करते हैं। कई इसी दिन नए वित्तीय वर्ष की शुरूआत करते हैं। एक बात अत्यंत महत्त्वपूर्ण है कि दीपावली पर एक दीये से ही दूसरा दीया जलाया जाता है और यह संदेश स्वतः ही प्रसारित हो जाता है कि "ज्योत से ज्योति जलाते चलो, प्रेम की गंगा बहाते चलो।" तथा ''अन्धकार को क्यों धिक्कारे अच्छा है एक दीप जलाये।'' तीनों ही दिन रात्रि में दीप जलाए जाते हैं। दीपावली के दूसरे दिन "गोवर्धन पूजा" मनाया जाता है। इस दिन भगवान श्रीकृष्ण ने लोकहित के लिए इन्द्र के अहंकार को तोड़कर उसे पराजित किया था। इस दिन गाय की पूजा पूरे भक्ति भाव से होती है।

(5) भाई–दूज पर बहन भाई के ललाट पर तिलक लगाकर उसके शुभ संकल्पों के पूरा करने का वचन देती है :–

दीपावली के दो दिन बाद तक यानि कि भाई–दूज तक दीपावली की रोशनी से पूजा स्थल, हर घर, गली, चौराहा जगमगाते रहते हैं। "भाईदूज" के शुभ अवसर पर बहन अपने भाई के मस्तक पर तिलक लगाकर उसकी भलाई की प्रार्थना तथा उसके शुभ संकल्पों में पूरा सहयोग करने का वचन देती है। रक्षा बंधन से अभिप्राय है कि जब बहन, भाई की ललाट पर टीका लगाती है तो वह कह रही होती है, 'मेरे प्रिय भाई मैं जीवन के प्रत्येक क्षण में आपके जनहित के संकल्प को पूरा करने में सहयोग करूँगी।' अर्थात बहनें, भाई को ईश्वरीय कार्यों के लिए हार्दिक सहयोग जीवन पर्यन्त देने की परमात्मा से प्रार्थना करती हैं। यही भाई–दूज का वास्तविक अर्थ है। हमारे प्रत्येक कार्य रोजाना परमात्मा की सुन्दर प्रार्थना बने।

(5) मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम की शिक्षायें हमें मर्यादित जीवन जीने का समग्र ज्ञान कराती हैं :–

हम दीपावली का परम–पावन त्योहार खूब उत्साह से मनाकर अपनी संस्कृति को बनाये रखने में महत्त्वपूर्ण योगदान देते हैं लेकिन ऐसे सुंदर अवसरों पर यह चर्चा करना अक्सर भूल जाया करते हैं कि कैसे भगवान् श्री राम ने प्रभु की आज्ञा तथा इच्छा को जानने के बाद समाज में मर्यादा का आदर्श प्रस्तुत करने के लिए अपने जीवन के राजसी सुखों को दाँव पर लगा दिया। श्रीराम की शिक्षायें हमें थोड़ी देर के लिए भक्ति में भावविभोर कर देने के लिए नहीं है वरन् वह जीवन शैली व जीवन जीने का समग्र ज्ञान कराती है। साथ ही यह मनुष्य के जीवन में वैचारिक बदलाव लाकर रामराज्य की स्थापना का एक सुनिश्चित एवं ठोस आधार है। श्रीराम द्वारा अपने जीवन द्वारा दी गई मर्यादा की शिक्षाएं युगों–युगों तक मानव जाति को मर्यादित जीवन जीने का मार्गदर्शन करती रहेगी। श्रीराम ने अपने जीवन से मर्यादाओं के पालन की शिक्षा देकर मानव जीवन को मर्यादित बनाया। श्रीराम ने कोई ग्रन्थ नहीं दिया। महापुरूषों ने श्रीराम के जीवन चरित्र को अपनी कल्पना शक्ति के आधार पर व्यक्त किया है। रामायण के प्रणेता थे आदिकवि 'वाल्मीकि' उनकी काव्य–कृति 'रामायण' उनके अंतरंग से प्रस्फुटित हुई। महान संत तुलसीदास द्वारा रचित 'रामचरित्रमानस' जन सामान्य में लोकप्रिय धार्मिक ग्रन्थ है।

(6) पटाखें आर्थिक, मानसिक तथा सामाजिक दृष्टि से बहुत हानिकारक हैं :–

क्या यह उचित न होगा कि हम श्रीराम की अयोध्या वापसी का यह पर्व शिष्टता–शालीनता के साथ दीये, रोशनी जलाकर तथा पौष्टिक भोजन, फल–फ्रूट व मिठाई खाकर मनाये। जुए–शराब व पटाखे जलाकर इसे समाज के लिए हानिकारक क्यों

www.thearyasamaj.org

बनाये? धन बचाकर उसे परिवार के कल्याण तथा परोपकार में लगाये। इस तरह से सही मायने में मर्यादापुरूषोत्तम श्रीराम के आदर्शों के अनुरूप दीपावली का पर्व मनाएँ। अपनी प्यारी धरती को सुन्दर एवं सुरक्षित बनाने के लिए आज हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि "प्रदूषण द्वारा मानव जगत का विनाश हो रहा है, उससे मानव जगत को मुक्त करेंगे", "हम दीवाली जरूर मनायेंगे – पर हम पटाखे नहीं जलायेंगे।" शुभ दीपावली के बारे में जन समुदाय को साफ–सुथरा पर्यावरण निर्मित करने के प्रति जागरूक करते हुए यह बताया जाना चाहिए कि वे पटाखे न छुड़ाये। यह पर्यावरण, आर्थिक, स्वास्थ्य, मानसिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक दृष्टि से बहुत हानिकारक है।

(7) बाल एवं युवा पीढ़ी को नीचे दिये गये 9 बिन्दुओं के बारे में बताकर जागरूकता उत्पन्न करनी चाहिए :–

(1) बहुत तेज आवाज वाले (125 डेसिबल से अधिक) पटाखे जलाने पर कानूनी प्रतिबन्ध है। शान्ति क्षेत्र अर्थात अस्पतालों आदि के 100 मीटर के दायरे में पटाखे छोड़ना पूर्णतः प्रतिबन्धित है। (2) हमारे देश में दीपावली पर 3,000 करोड़ रूपये से अधिक के पटाखे एक दिन में धुआ–बारूद बनकर हमारे वायुमण्डल व वातावरण को विषाक्त करते हैं। इस धन से कितने अंधेरे घरों में चिराग जल सकते हैं तथा कितने बच्चों को मुरझाये चेहरे खिल सकते हैं। (3) हर वर्ष दीपावली पर हो रही आग की हजारों दुर्घटनाओं के कारण कितने बच्चे–नवयुवक अंधे–बहरे व अपंग हो रहे हैं और कितनों की मृत्यु हो रही है तथा अकल्पनीय राष्ट्रीय सम्पदा तथा मानव संसाधन जलकर खाक हो रहे हैं। (4) पटाखों के हुड़दंग से हमारे साथ पृथ्वी पर रहने वाले मासूम पशु–पक्षी बेहाल व मरणासन्न हो जाते हैं। हमारे शास्त्रों, पुराणों, चारों वेदों, रामायण, गीता में पटाखे–आतिशबाजी चलाकर दीपावली मनाने का कोई उल्लेख नहीं है। जुए–शराब व पटाखों के बारूद से मनाई जाने वाली दीपावली का पर्व मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम की शिक्षाओं पर चलने की घोर उपेक्षा करना है। (5) इस प्रकार आप समझ सकते हैं कि पूरे भारतवर्ष में अस्थमा रोगियों को पटाखों का प्रदूषण किस प्रकार हानि पहुँचाता होगा। क्या हम इस पाप के भागीदार नहीं हैं? (6) दीपावली के दिन शाम 6.00 से लेकर रात 10.00 के अतिरिक्त पटाखे चलाने एवं आतिशबाजी करने पर पूर्ण प्रतिबन्ध है। रात 10.00 बजे के बाद पटाखे छोड़ने पर आपके विरूद्ध कानूनी कार्यवाही हो सकती है। (7) केवल देश के एक महानगर में जले पटाखों का 1500 मीट्रिक टन कचरा जो फास्फोरस, सल्फर व पोटेशियम क्लोरेट से युक्त है, हमारी मिट्टी, पानी तथा हवा में जहर भर देगा। इस जानलेवा प्रदूषण से देश के शहर गैस चैम्बर बन जायेंगे। (8) इस दीपावली पर अनुमानतः लगभग 50,000 दिल्ली में निवास करने वाले अस्थमा मरीज डाक्टरी सलाह पर कुछ दिनों के लिये दिल्ली छोड़कर चले जायेंगे। (9) दीपावली के पटाखों के कारण वायुमण्डल में सल्फर डाई आक्साइड और कार्बन डाइआक्साइड की मात्रा कई गुणा बढ़ जाती है जो सबके स्वास्थ्य के लिए विष तुल्य है। बच्चे, बूढ़े और बीमार इससे विशेष प्रभावित होते हैं।

(8) हमें ईश्वरीय प्रकाश से प्रकाशित हृदय धारण करके सामाजिक परिवर्तन लाने का सशक्त माध्यम बनना चाहिए :–

दीपावली का पर्व सुख–समृद्धि, सुयश–सफलता, उन्नति, अंतस् की शुद्धता, पवित्रता और घर–आँगन की स्वच्छता की प्रेरणाओं से ओतप्रोत पर्व है ताकि अज्ञानता के अन्धकार की सारी बेड़ियाँ कट जाएँ और संसार का प्रत्येक व्यक्ति ईश्वरीय प्रकाश से प्रकाशित हृदय धारण करके विश्व में सामाजिक परिवर्तन लाने का सशक्त माध्यम बने। जीवन के परम लक्ष्य ईश्वर की नजदीकी को प्राप्त करें। परमात्मा हमें कार्य–व्यवसाय में सदैव उन्नति–प्रगति की ओर अग्रसर रहने की प्रेरणा दें। बुराइयों को त्यागकर अच्छाइयों को ग्रहण करके आत्मा का जीवन जीने की शक्ति दें। ज्योति पर्व दीपावली हम सबके लिए शुभ रहे, मंगलकारी रहे और कल्याणकारी रहे। परमात्मा का स्नेह–आशीष सदैव हम सबके साथ रहे। प्रकाश पर्व दीपावली तथा भाई दूज की हार्दिक शुभकामनाओं सहित!

निर्वाचन

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा ट्रस्ट की बैठक दिनांक 30.8.2016 को आर्य समाज राजेन्द्र नगर नई दिल्ली में हुई, इस बैठक ट्रस्ट के मंत्री पद से त्याग पत्र देने के पश्चात् ट्रस्ट का मंत्री पद रिक्त होने पर श्री चतर सिंह नागर जी को ट्रस्ट का मंत्री बनाया गया और श्री गुरुदत्त तिवारी जी की सहमति से उनके स्थान पर श्री नागर जी को पहले ट्रस्ट का ट्रस्टी बनाया गया था।

– प्रधान ट्रस्ट

– शेष पिछले अंक का

अखंड भारत के सृष्टा योगेश्वर श्रीकृष्ण

– समाजवादी डॉ. राम मनोहर लोहिया

राजगिरि राज्य कंस–वध पर तिलमिला उठा होगा। कृष्ण ने पहले ही वार में मगध की पश्चिमी ताकत को खत्म–सा कर दिया। लेकिन अभी तो ताकत बहुत ज्यादा बटोरनी और बढ़ानी थी। यह तो सिर्फ आरम्भ था। आरम्भ अच्छा हुआ। सारे संसार को मालूम हो गया। लेकिन कृष्ण कोई बुद्धू थोड़े ही था, जो आरम्भ की लड़ाई को अन्त की बना देता। उसके पास अभी इतनी ताकत तो थी नहीं जो कंस के ससुर और पूरे हिन्दूस्तान की शक्ति से जूझ बैठता। वार करके, संसार को डंका सुना के कृष्ण भागे बड़ी दूर, द्वारका में। तभी से उसका नाम रणछोड़दास पड़ा। गुजरात में आज भी हजारों लोग, शायद एक लाख से भी अधिक लोग होंगे, जिनका नाम रणछोड़दास है।..

पहले मैं इस नाम पर हँसा करता था, मुसकाना तो कभी न छोड़ूंगा। यों, हिन्दुस्तान में और भी देवता हैं जिन्होंने अपना पराक्रम भाग कर दिखाया जैसे ज्ञानवापी के शिव ने। यह पुराना देश है। लड़ते–लड़ते थकी हड्डियों को भागने का अवसर मिलना चाहिए। लेकिन कृष्ण थकी पिंडिलियो के कारण नहीं भागे वह भागे जवानी की बढ़ती हड्डियों के कारण। अभी हड्डियों को बढ़ाने और फैलाने का मौका चाहिए था। कृष्ण की पहली लड़ाई तो आजकल की छापामार लड़ाई की तरह थी, वार करो और भागो। अफसोस यही है कि कुछ भक्त लोग भागने ही में मजा लेते हैं।

कृष्ण मगध धुरी का नाश करके कुरु धुरी की क्यों प्रतिष्ठा करनी चाही? इसका एक उत्तर तो साफ है, भारतीय जागरण का बाहुल्य उस समय उत्तर और पश्चिम में था, जो राजगिरि और पटना से बहुत दूर पड़ जाता था। उसके अलावा मगध धुरी पुरानी बन चुकी थी, शक्तिशाली थी, किन्तु उसका फैलाव संकुचित था। कुरु धुरी नयी थी और कृष्ण इसकी शक्ति और इसके फैलाव दोनों का ही सर्वशक्तिसम्पन्न निर्माता था। मगध धुरी को जिस तरह चाहता शायद न मोड़ सकता, कुरु को अपनी इच्छा के अनुसार मोड़ और फैला सकता था। सारे देश को बांधना जो था उसे!!

कृष्ण त्रिकालदर्शी था। उसने देख लिया होगा कि उत्तर–पश्चिम में आगे चल कर यूनानियों, हूणों, पठानों, मुगलों आदि के आक्रमण होंगे। इसलिए भारतीय एकता की धुरी का केन्द्र वहीं कहीं रचना चाहिए, जो इन आक्रमणों का सशक्त मुकाबला कर सके। लेकिन त्रिकालदर्शी क्यों न देख पाया कि इन विदेशी आक्रमणों के पहले ही देशी मगध धुरी बदला चुकायेगी और सैकड़ों वर्ष तक भारत पर अपना प्रभुत्व कायम करेगी। और आक्रमण के समय तक कृष्ण की भूमि के नजदीक यानि कन्नौज और उज्जैन तक खिसक चुकी होगी, किन्तु अशक्त अवस्था में। त्रिकालदर्शी ने देखा शायद यह सब कुछ हो, लेकिन कुछ न कर सका हो !!

वह हमेशा के लिए अपने देशवासियों को कैसे ज्ञानी और साधु दोनों बनाता। वह तो केवल रास्ता दिखा सकता था। रास्ते में भी शायद त्रुटि थी। त्रिकालदर्शी को यह भी देखना चाहिए था कि उसके रास्त पर ज्ञानी ही नहीं, अनाड़ी भी चलेंगे और वे कितना भारी नुकसान उठायेंगे। राम के रास्ते चल कर अनाड़ी का भी अधिक नहीं बिगड़ता, चाहे बनना भी कम होता हो।

अनाड़ी ने कुरु–पांचाल संधि का क्या किया? कुरु धुरी की आधारशिला थी कुरु–पांचाल संधि, आसपास के इन दोनों इलाकों का वज्र समान एका कायम करना था। सो कृष्ण ने उन लीलाओं के द्वारा किया, जिससे पांचाली का विवाह अर्जुन से हो गया। पांचाली भी अद्भुत नारी थी। कैसे कुरु सभा को उत्तर देने के लिए ललकारती है कि जो आदमी अपने को हरा चुका है, क्या दूसरे को दांव पर रखने की उसमें स्वतन्त्र सत्ता है?

कृष्ण के कुरु धुरी के और भी रहस्य रहे होंगे। साफ है कि राम आदर्शवादी एकरूप एकत्व के निर्माता और प्रतीक थे, उसी तरह जरासंध भौतिकवादी एकत्व का निर्माण था। आजकल कुछ लोग कृष्ण और जरासंघ युद्ध को आदर्शवाद–भौतिकवाद का युद्ध मानने लगे हैं। वह सही जंचता है, किन्तु है अधूरा विवेचन। जरासंध

www.thearyasamaj.org

भौतिकवादी एकरूप एकत्व का इच्छुक था। बाद में मगधीय मौर्य और गुप्त राज्यों में कुछ हद तक इसी भौतिकवादी एकरूप एकत्व का प्रादुर्भाव हुआ और उसी के अनुरुप बौद्ध धर्म का। कृष्ण आदर्शवादी बहुरूप एकत्व का निर्माता था। जहां तक मुझे मालूम है, अभी तक भारत का निर्माण भौतिकवादी बहुरूप के आधार कर कभी नहीं हुआ।

चिर चमत्कार तो तब होगा जब आदर्शवाद और भौतिकवाद के मिले–जुले बहुरूप एकत्व के आधार पर भारत का निर्माण होगा। अभी तक तो कृष्ण का प्रयास ही सर्वाधिक माननीय मालूम होता है, चाहे अनुकरणीय राम का एक रूप एकत्व ही हो। कृष्ण की बहुरूपता में वह त्रिकाल जीवन है जो औरों में नहीं।

बेचारे कृष्ण ने इतनी निःस्वार्थ मेहनत की, लेकिन जन–मन में राम ही आगे रहा है। सिर्फ बंगाल में ही मुर्दे–'बोल हरि, हरि बोल' के उच्चारण से–अपनी आखिरी यात्रा पर निकाले जाते हैं, नहीं तो कुछ दक्षिण को छोड़ कर सारे भारत में हिन्दू मुर्दे 'राम नाम सत्य है' के साथ ही ले जाते हैं। बंगाल के इतना तो नहीं, फिर भी उड़ीसा और असम में कृष्ण में कौन उन्नीस, कौन बीस है?? सबसे आश्चर्य की बात है। स्वयं ब्रज के चारों ओर की भूमि के लोग भी वहां एक–दूसरे को 'जैरामजी' से नमस्ते करते हैं। सड़क चलते अनजान लोगों को भी यह 'जैयरामजी' बड़ा मीठा लगता है।

शायद एक कारण यह भी हो। राम त्रेता के मीठे, शान्त और सुसंस्कृत युग का देव है। राम गम्य है। कृष्ण अगम्य है। कृष्ण ने इतनी अधिक मेहनत की कि उसके वंशज उसे अपना अन्तिम आदर्श बनाने से घबराते हैं। यदि बनाते भी हैं तो उसके मित्रभेद और कूटनीति की नकल करते हैं। उसका अथक प्रयास उनके लिए असाध्य रहता है। इसीलिए कृष्ण हिन्दुस्तान में कर्म का देव न बन सका।

कृष्ण ने कर्म राम से ज्यादा किऐ हैं, कितनी संधियां और विग्रह, प्रदेशों के आपसी सम्बन्धों के धागे उसे पलटने पड़ते थे। यह बड़ी मेहनत और बड़ा पराक्रम था। इसके वह मतलब नहीं कि प्रदेशों के आपसी सम्बन्धों में कृष्ण नीति अब भी चलायी जाये। कृष्ण जो पूर्व–पश्चिम की एकता दे गया, उसी के साथ नीति का औचित्य भी खत्म हो गया।

बच गया कृष्ण का मन और उसकी वाणी। और बच गया राम का कर्म। अभी तक हिन्दुस्तानी इन दोनों का समन्वय नहीं कर पाये हैं। करें तो राम के कर्म में भी परिवर्तन आये। राम रोऊ है। इतना कि मर्यादा भंग होती है। कृष्ण कभी रोता नहीं। इतना कि मर्यादा भंग होती है। कृष्ण कभी रोता नहीं। आंखे जरुर डबडबाती हैं उसकी कुछ मौकों पर !! जैसे जब किसी नारी को दुष्ट लोग नंगा करने की कोशिश करते हैं!!....

कैसे मन और वाणी थे उस कृष्ण के। अब भी जो चाहे वे, उसकी वाणी और मुरली की तान सुन कर रस विभोर हो सकते हैं और अपने चमड़े के बाहर उछल सकते हैं।

साथ ही कर्म–संग के त्याग, सुख–दुख, शीत–ऊष्ण, जय–अजय के समत्व योग और सब भूतों में एक अव्यक्त भाव का सुरीला दर्शन उसकी वाणी सुन सकते हैं। संसार में एक कृष्ण ही हुआ जिसने दर्शन को गीत बनाया।

मैं समझता हूं कि नारी अगर कहीं नर के बराबर हुई है तो सिर्फ ब्रज और कान्हा के पास। शायद इसीलिए आज भी हिन्दुस्तान की औरतें वृन्दावन में जमुना के किनारे पेड़ में रूमाल जितनी चुनड़ी बांधने का अभिनय करती हैं। क्योंकि कौन औरत नहीं जानती कि दुष्ट जनों द्वारा चीरहरण के समय कृष्ण ही उनकी चुनड़ी अनन्त करेगा!!! उनकी, पुण्य आदि की कामना के पीछे भी सुषुप्त याद है।

सरयू और गंगा–कर्तव्य की नदियां हैं कभी–कभी कठोर हो कर अन्यायी हो जाती हैं और नुकसान कर बैठती हैं। जमुना तथा दूसरी जमुनान्मुखी नदियां रस की नदियां है। रस में मिलन है, कलह मिटाना है, लेकिन हास्य भी है, जो गिरावट के मनुष्य को निकम्मा बना देता है। इसी रसभरी इतराती यमुना के किनारे कृष्ण ने अपनी लीला की, लेकिन कुरु धुरी का केन्द्र उसने गंगा के किनारे ही बसाया। बाद में हिन्दुस्तान के कुछ राज्य जमुना के किनारे बने और अब एक भी चल रही हैं। जमुना तुम कभी कदलेगी? आखिर गंगा में गिरती हो, कभी इस भूमि पर रसमय कर्तव्य का उदय होगा? कृष्ण !!!.....

.....इति....

गौमाता भारत की आत्मा

भारत की आत्मा भारत की संस्कृति है और भारत की संस्कृति का गाय की महत्ता पर कितने ही शास्त्र लिखे जा चुके है और कितने ही शास्त्रों का निर्माण भविष्य करेगा तो भी गौ की महत्ता की सम्पर्णता उल्लेखित न हो सकेगी क्योंकि अगणित गुण, अगणित लाभ और अगणित भावों को लहलहाता हुआ समन्दर हैं गाय। इसलिए मेरे गोभक्त साथियों ये वही भारत भूमि है जिस पर महर्षि विश्वामित्र भगवान राम को हथेली पर गंगा जल की जगह गौमूत्र रख कर प्रतिज्ञा दिलाते है और राम प्रतिज्ञा करते है – मैं राम ये प्रतिज्ञा करता हूँ कि जब तक यज्ञ को विध्वंस करने वाले और गाय के हत्यारों का विनाश न कर दूंगा तब तक वापिस अयोध्या न लौटूगां और इतिहास साक्षी है भगवान राम ने चौदह हजार राक्षसों का उस समय विनाश किया था।

उसके बाद भगवान कृष्ण ने स्वयं जीवन पर्यन्त गौसेवा की। सारा बचपन गायों के परिवेश में जीया। ये भारत उसी राम और कृष्ण की धरती हैं गौभक्त साथियों जिस पर आज फिर गौमाता पर संकट आया है। हर तरफ राक्षसों की भीड गौमाता पर टूट पड़ी है आज फिर भारत माता गौमाता की करुण कन्दन से कपकपा रही है, इस पवित्र मिटटी पर जहाँ गाय का गोबर और मूत्र गिर कर खाद रुप हो मिटटी में मिलना चाहिए था। आज उसी मिटटी में गाय की गर्म–गर्म धारा बह– करके मिल रही है, जो गौ हमारे पूर्वजों की पूज्या थी आज उसी पूज्या गौमाता की कटी हुई हडिडयां हम हिन्दुओं की ठोकरों में है। मेरे गौर भक्त मित्रों क्या आज फिर गौ रक्षा के लिए गौमूत्र हाथ में लेकर संकल्प करने का समय नही आ गया? क्यों वीर शिवाजी की तरह हमारी तलवारों गौरक्षा के लिए पापियों के हाथों को नहीं काटना चाहिए? क्यों हमारी आखों में गौ हत्यारों के लिए खून नही उतरता, गौ भक्तों तुम अपना गाण्डीव तो उठाओ तुम्हे कृष्ण गोपाल की शंख ध्वनि भी सुनाई देगी, तुम अपना गाण्डीव पर अग्निबाण तो खींचों तुम्हे केशव के सुदर्शन के चक्र की गर्जना भी सुनाई देगी जागोगे तो विजय निश्चित हैं।

हे गौभक्तों सत्ता और शासकों के भरोसे मत बैठो, सत्ताएं स्वार्थी होती है वे केवल शक्ति की ही भाषा समझती है, अगर संगठित होकर हमने शक्ति प्रदर्शन किया तो सत्ता भी हमारी ठोकर में होगी, हमें अगर भारत और अपनी संस्कृति को बचाना है तो वेद की आज्ञा का पालन करना होगा।

वेद कहता है –

अगर कोई व्यक्ति गाय की हत्या करे तो उसे गोलियों से भून दो....।

जय गौमाता–जय गौमाता–जय गौमाता.....आचार्य सर्वमित्र आर्य जी ।

महामंत्री सन्देश गौरक्षा दल हरियाणा

–गौरक्षा दल गुजरात रोनक कुमार शास्त्री–9426180348

शोक समाचार

हम बड़े दुःख के साथ सूचित कर रहे हैं कि भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा, दिल्ली की कार्यकारिणी समिति के सदस्य, अखिल भारतीय श्रद्धानंद दलितोद्धार सभा, पहाड़गंज, नई दिल्ली के मंत्री, आर्य समाज, शालीमार बाग, दिल्ली के संस्थापक सदस्य, राष्ट्र भाषा हिंदी के अनन्य सेवक श्री नाहर सिंह वर्मा की धर्म पत्नी श्रीमती सत्यवीरी देवी का 72 वर्ष की आयु में जन्माष्टमी की रात दिनांक 26.08.2016 को आकस्मिक निधन को गया। उनका अंतिम संस्कार, आर्य पुरोहित प्रद्युम्न शास्त्री द्वारा वैदिक विधि से कराया गया। वे आर्य विचार धारा से ओत प्रोत आदर्श महिला थी और प्रतिदिन योग और प्राणायाम करती थीं।

आर्य समाज, शालीमार बाग में दिनांक 29.08.2016 को श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया, जिसमे श्री वर्मा के परिवारी जन, रिश्तेदारों के अलावा, आर्य समाज, शालीमार बाग तथा आसपास की अन्य समाजों, सस्थाओं के सदस्य और अधिकारी शामिल हुए। शुद्धि सभा परिवार परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को सदगति प्रदान करें और श्री वर्मा परिवार को इस कष्ट को सहन करने की शक्ति दें।

– नरेन्द्र मोहन वलेचा

www.thearyasamaj.org

जीवन क्या है?

जीवन क्या है? जब हम इसकी खोज करने में जुटते हैं तो पता चलता है विभिन्न मनुष्य जो कुछ भी जानकर या मानकर कर रहे हैं वे जीवन के ही विविध अंग विविध रूप हैं। कोई कृषि कर रहा है, कोई किसी के यहाँ मजदूरी कर रहा है, कोई सिपाही है, कोई अध्यापक, कोई वैज्ञानिक एकान्त में रहता हुआ अहर्निश अपनी किसी खोज में ही लीन है, कोई राजनेता है, कोई व्यापारी, कोई उद्योगपति है, कोई खिलाड़ी, कोई नदी के किनारे बैठा हुआ मछली पकड़ रहा है, कोई उत्सव मना रहा है, कोई अपने प्रिय सम्बन्धी के वियोग में बैठा रो रहा है, कोई आपस में लड़ रहा है, कोई स्त्री-पुत्र, परिवार के मोह में डूबा हुआ है, कोई इन सब को छोड़कर एकान्तवास कर रहा है, कोई विविध सम्बन्धों को जीवन की एक विशिष्ट सारभूत चीज के रूप में देखता है तथा दूसरा इसे कुछ महत्त्व ही नहीं देता, कुछ युवक-युवति कामवासना में जल रहे हैं, कोई समस्त विकारों से ऊपर उठने की साधना में जुटा हुआ है, कोई ध्यान में रस लेता है तो कोई भीड़ में, कोई अपनी आजीविका मात्र चलाने में ही व्यस्त है तो कोई सामाजिक कार्यों में अपना समय लगा रहा है, कोई अपने को समझने के लिये भगीरथ प्रयत्न कर रहा है तो दूसरे केवल इन दिखाई देने वाली चीजों को ही सारा महत्त्व दे रहे हैं, कुछ महिलायें खेत से भारी बोझा उठाकर बात करते हुए चली आ रही हैं, दूसरी विविध रंग बिरंगे वस्त्रों और केश विन्यास से अपने को सजा रही हैं, कुछ सदा सर्वत्र शान्ति में डूबे रहते हैं तो कुछ एक को झगड़ा किये बिना ऐसा लगता है कि आज कोई आवश्यक कार्य छूट गया है, कुछ मन-वाक्-काय को हर समय संयमित रखते हैं तो कुछ पूरे स्वेच्छाचारी है, कुछ त्यागी, तपस्वी और संन्यासी के रूप में हैं तो दूसरे गृहस्थ, कुछ महास्वार्थी होकर अपने ही सुखों की चिन्ता कर रहे हैं तो कुछ कष्ट उठाकर भी दूसरों को अधिक से अधिक सुख देना चाहते हैं, कुछ पशुओं के रक्षण में लगे हुए हैं तो कुछ वृक्षारोपण में, कुछ वन-उपवन, फल-फूल प्रकृति के सौन्दर्य में बहुत रुचि ले रहे हैं तो दूसरों का स्वच्छता व सौन्दर्य की तरफ कोई ध्यान नहीं है। ये सब जीवन के ही अनेक रूप हैं।

व्यक्ति के अपने संस्कार तो होते ही हैं, साथ में जिस परिवेश या वायुमण्डल में रहता है उसका भी जीवन के चयन या निर्धारण में विशेष योगदान रहता है उसका भी जीवन के चयन या निर्धारण में विशेष योगदान रहता है। ऋषि आश्रम में पले हुए बालक की अभिरुचियाँ उससे अलग होंगी जो आकण्ठ भोगों में डूबे हुए गृहस्थों के यहाँ पल रहा है। जीवन को जब सामान्य या विशेष अथवा विकसित या अविकसित रूप में देखा या परखा जाता है तो यद्यपि अलग-अलग व्यक्ति अपने-अपने दृष्टिकोण से ही इसका उत्तर देते हैं। एक सांसारिक व्यक्ति के लिये तो निश्चय ही साधनसम्पन्नता, बहुत सारी उपाधियों से विभूषित होना, ऊँचे पदों पर प्रतिष्ठित रहना, मान-सम्मान की प्राप्ति, अच्छा भवन, अच्छा व्यापार, अच्छे पढ़े-लिखे बच्चे-ये चीजें ही विकसित जीवन की श्रेणी में गिनी जाती हैं। यहाँ तक कि इस विचार वाले लोग साधु-महात्माओं की महत्ता या बड़प्पन का निर्धारण भी इन्हीं चीजों से करते देखे जाते हैं कि इस महात्मा जी के लाखों शिष्य हैं- राष्ट्रपति, प्रधानमन्त्री और बड़े-बड़े उद्योगपति इनके पास आते हैं, इनका इतना सुन्दर आश्रम है, इनके पास चलने के लिए बहुत अच्छी-अच्छी गाड़ियाँ हैं, अपार धनसम्पत्ति है, इन्हें करोड़ों रुपये दान में मिलते हैं। जिनकी दृष्टि बाहर की तरफ खुली हुई है वे इन बाह्य चीजों, बाह्य साधनों, बाह्य स्थितियों के द्वारा ही जीवन का मूल्यांकन किया करते हैं। पर ज्ञानी पुरुष की दृष्टि में इन सब चीजों के होने या न होने से जीवन के विकास का कोई सम्बन्ध नहीं होता। किसी परिस्थिति या कारणवश ये चीजें नहीं हैं या बहुत हैं, ज्ञानी के लिए इससे कुछ अन्तर नहीं पड़ता, क्योंकि वे अन्दर की तरफ देखते हैं, वे बाहर भी देखते हैं तो अन्दर से देखते हैं। अतः जीवन के विकास को मापने वाले पैमाने उनके अलग ही होते हैं।

जो जीवन काम- क्रोध-लोभ-मोह-अंहकार-ईर्ष्या-द्वेष आदि विकारों से भरा हुआ है, प्रतिक्रियाओं में जिया जा रहा है, जिसमें मन व इन्द्रियाँ विषयों से प्रभावित रहती हैं, टेंशन-डिप्रेशन का जहाँ पूर्ण साम्राज्य है। आशा-निराशा, हर्ष-शोक जहाँ पीछा करते रहते हैं। अतृप्ति-अशान्ति से जहाँ व्यक्ति क्लेशित होता रहता है। इस प्रकार के जीवन को ज्ञानी पुरुष अविकसित, अपूर्ण व सामान्य ही समझते हैं फिर बेशक वहाँ कितना भी धन वैभव, उच्चपद या मान-सम्मान अथवा योग्य पुत्र-पुत्रियाँ व शिष्य मण्डली की अपार भीड़ ही क्यों न लगी हुई हो।

ज्ञानी की आँखें जीवन की पूर्णता को इस रूप में देखती हैं कि उसका अपने आप पर कितना अधिकार है? वह मन, प्राण, इन्द्रियों व विचार का स्वामी है या गुलाम? जैसे किसी सचेत गाड़ी चालक की इच्छा के बिना गाड़ी इधर-उधर नहीं मुड़ती, अपने निर्धारित मार्ग पर चलती रहती है, उसी प्रकार उसका मन, प्राण व शरीर एक क्षण के लिए भी अनियंत्रित तो नहीं होते? सामान्य जीवन में व्यक्ति सर्वदा शब्द में, रूप में, रस में, स्पर्श में, गन्ध में ही उलझा रहता है। हाँ! यह कल्पना से भी परे की बात मानी जाती है कि कोई किसी के प्रति अपमानजनक शब्द बोले या व्यवहार करे सुनने वाला सुनकर उसको वहीं छोड़ दे। सुन्दर रूप से उसके मन में कोई तरंग न उठे। किसी के मान-सम्मान को देखकर उसका मन शान्त बना रहे। विषय सुख में लीन संसार को देखकर उसके मन में उस सुख की इच्छा भी न जगे।

बहिर्मुखी जीवन में ये सब बातें असम्भव जैसी समझी जाती हैं और हैं भी, पर ज्ञानी पुरुष का जीवन ऐसे दृढ़ आधार पर प्रतिष्ठित होता है कि वह संसार की किसी भी घटना, परिस्थिति, दिखावे से विचलित नहीं होता। बाहर की ये सारी की सारी चीजें उसके मन में कोई प्रतिक्रिया उत्पन्न नहीं करतीं। उनकी उपस्थिति हो या अनुपस्थिति, उसका मन तटस्थ भाव से शान्त बना रहता है। ज्ञानी अपनी समस्त ऊर्जा को इसी स्थिति को प्राप्त करने में व्यय करता है, इसके सिवाय उसका मन कहीं भी नहीं रमता। जीवन का यही रूप उसे प्रकृष्टतम दिखायी देता है। वस्तुतः वह व्यक्ति कितना भाग्यशाली है जिसमें एक क्षण के लिये भी दुःख, पीड़ा, क्लेश, आकर्षण-विकर्षण, अज्ञान आदि न हों। ऐसे ज्ञानवान् के लिये हमारा प्रणाम है।

साभार – साधना पथ,
लेखक :- आवार्य प्रद्युम्न जी
पंतजंजलि योगपीठ

हिन्दी प्रचारक शताब्दी सम्मान-2016

14 सितम्बर 2016 को हिन्दी लाओः देश बचाओ अनुष्ठान के अवसर पर हिन्दी प्रचारक शताब्दी सम्मान-2016 का पुरस्कार लब्धप्रतिष्ठ लोक साहित्य की प्रख्यात लेखिका, कवयित्री, बाल साहित्यकार, समीक्षक एवं संपादक डॉ. मालती शर्मा को देना सुनिश्चत किया गया है। यह सम्मान श्रीनाथद्वारा में 'साहित्य-मण्डल' द्वारा आयोजित भव्य समारोह में प्रदान किया जायेगा। सम्मानस्वरूप अभिनन्दन एवं सम्मान पत्र सहित ग्यारह हजार की राशि भेंट की जायेगी।

वाराणसी में सन् 1905 में स्थापित हिन्दी प्रचारक परिवार के संस्थापक, निस्पृह समाजसेवी, साहित्यानुरागी एवं प्यारी कथाओं के सुप्रसिद्ध लेखक श्री निहालचन्द्र बेरी तथा उनके यशस्वी पुत्र व हिन्दी प्रकाशन जगत के पुरोधा श्री कृष्णचन्द्र बेरी की पावन स्मृति में 'हिन्दी प्रचारक शताब्दी सम्मान' प्रतिवर्ष हिन्दी दिवस के अवसर पर दिया जाता है। ज्ञातव्य है कि उक्त पुरस्कार अब तक प्रख्यात कथाकार एवं समीक्षक डॉ. युगेश्वर, प्रख्यात कोशकार एवं भाषाविद् डॉ. बदरीनाथ कपूर, पश्चिम बंगाल के पूर्व अतिरिक्त मुख्य सचिव एवं प्रतिष्ठित कथाकार डॉ. प्रमोद कुमार अग्रवाल, नार्वे के प्रवासी कवि एवं संपादक श्री सुरेशचंद्र शुक्ल 'शरद आलोक', प्रख्यात कहानीकार एवं संपादक श्रीमती उर्मिकृष्ण, गुरुनानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर के पूर्व हिन्दी विभागध्यक्ष एवं साहित्यकार डॉ. हरमहेन्द्र सिंह बेदी, सुप्रसिद्ध हिन्दी विज्ञान लेखक एवं साहित्यकार डॉ. शिवगोपाल मिश्र, लब्धप्रतिष्ठ समीक्षक एवं संपादक प्रो. सूर्य प्रसाद दीक्षित, प्रख्यात हिन्दी सेवी एवं लेखक डॉ. बद्रीनारायण तिवारी, इंडिया टीवी के समाचार निदेशक एवं लेखक डॉ. हेमन्त शर्मा, लब्ध प्रतिष्ठ निबन्धकार डॉ. अमर सिंह वधान, प्रख्यात हिन्दी सेवी, सम्पादक तथा लेखक श्री उमाशंकर मिश्र तथा लब्धप्रतिष्ठ निबन्धकार, कवि, समीक्षक एवं सम्पादक डॉ. नृपेन्द्र नाथ गुप्त को प्रदान किया जा चुका है।

-सुरेन्द्र वाजपेयी, जनसम्पर्क अधिकारी

www.thearyasamaj.org

हिन्दी दिवस (14 सितम्बर)

1. 65 वर्ष पूर्व हिन्दी को सर्व सम्मति से स्वतन्त्र भारत की राज भाषा स्वीकृति तो दी थी किन्तु इसको उचित महत्व नहीं दिया गया।
2. जून 2014 मं राजग की मोदी सरकार के केन्द्रीय मन्त्रियों को मोदी जी ने निर्देश दिया कि सरकारी कार्य अधिक से अधिक हिन्दी में किया जाए।
3. वर्धा (महाराष्ट्र) में 1977 से महात्मा गांधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय चल रहा है।
4. रूस में मास्को और सेन्ट पीट्सबर्ग में वहां की सरकार ने एक हिन्दी विश्वविद्यालय भी सीापित किया है।
5. सम्पूर्ण विश्व में हिन्दी सिखाने की सर्वोत्तम सुविधाएं रूस में ही हैं।
6. हिन्दी संयुक्त राष्ट्रसंघ की भाषाओं में भी सम्मिलित होने की सबल स्थिति में है।
7. विश्व के 33 देशों के 127 विश्वविद्यालय आज इसे स्वेच्छापूर्वक अपना रहे हैं।
8. हिन्दी के प्रति उपेक्षा का भाव हिन्दी भाषी राज्यों में ही कहीं ज्यादा है।

   इस दशा को देखते हुए हम सभी हिन्दी संस्थाओं से मांग करते हैं कि वे सभी हिन्दी भाषी प्रदेशों की सरकारों को ज्ञापन देकर मांग करें कि सभी विश्वविद्यालयों में हिन्दी विभाग खोलना अनिवार्य हों क्योंकि इस समय 191 विश्वविद्यालय हैं किन्तु हिन्दी विभागों की संख्या केवल 103 है।
9. हिन्दी की शब्द संख्या सात लाख के आसपास है जबकि अंग्रेजी की शब्द संख्या केवल ढ़ाई लाख है।
10. हिन्दी में जैसा लिखा जाता है उसे वैसा ही पढ़ा जाता है जैसे क को क ही पढ़ा जाएगा लेकिन अंग्रेजी में ब को क और स भी पढ़ा जाता है। अंग्रेजी में ऐसे बहुत शब्द हैं।
11. आज विश्व के 132 देशों में रह रहे करीब 125 करोड़ भारतीय तथा विदेशी लोग इसे अपना रहे हैं।
12. दक्षिणी अफ्रीका में 21–9–2012 में नवां विश्व हिन्दी सम्मेलन हुआ था। इसमें 18 भारतीय तथा 30 विदेशी विद्वानों को सम्मानित किया गया था।
13. अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी साहित्य कला मंच, मुरादाबाद भी विदेशों में हिन्दी सम्मेलन करती है।
14. हिन्दी प्रचार वाणी मासिक पत्रिका बेंगलूर मं छपती है और दक्षिण भारत में 1979 से हिन्दी का प्रचार–प्रसार कर रही है।
15. तमिलनाडु हिन्दी का विरोधी राज्य है। उसकी राजधानी चैन्नई में 15000 हिन्दी भाषी मतदाता हैं। अप्रैल–मई 2014 के लोकसभा चुनावों में तमिल समर्थक पार्टियों ने भी हिन्दी भाषियों को लुभाने के लिए हिन्दी में प्रचार पत्रक छपवाए थे।

महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में बोधोत्सव का आयोजन

आर्य जनों को यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता होगी कि प्रतिवर्ष की भांति आगामी वर्ष में महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में शिवरात्रि के पावन पर्व पर भव्य ऋषि बोधोत्सव का आयोजन वीरवार, शुक्रवार, शनिवार 23, 24, 25 फरवरी 2017 को किया जायेगा। आपसे निवेदन है कि आप यह तिथियाँ अभी से अंकित कर लेवें और इन तिथियों में अपनी आर्य समाज एवं अपनी संस्था का कोई कार्यक्रम न रखकर उक्त समारोह में अधिक से अधिक आर्य जनों के साथ टंकारा पधारने का कार्यक्रम बनायें। आपके आवास एवं भोजन की व्यवस्था टंकारा ट्रस्ट की ओर से होगी।

जन्मदिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

महान् कर्मयोगी, धर्म निष्ठ, सर्वप्रिय, परोपकारी, सहृदय, यशस्वी, 'शुद्धि सभा' के तन, मन, धन से सहयोगी श्री चन्द्र भान चौधरी 21 सितम्बर 2016 को अपने जीवन के 91 वर्ष पूरे कर रहे हैं। आपका व्यक्तित्व भावी पीढ़ी के लिए प्रेरणा स्त्रोत हैं।

21 सितम्बर को आपके 92वें जन्म दिवस के शुभावसर पर मैं "शुद्धि सभा" परिवार की ओर से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं प्रदान करता हूँ। परम पिता परमात्मा आपको उत्तम स्वास्थ्य के साथ दीर्घायु प्रदान करें।

श्री चौधरी जी पिछले लगभग 20 वर्षों से शुद्धि सभा के लिए प्रतिमाह दान राशि एकत्र करके शुद्धि सभा के कार्यो में सहयोग प्रदान कर रहें हैं।

– नरेन्द्र मोहन वलेचा, महामंत्री

सितम्बर –2016 के आर्थिक सहयोगी

श्री नाहर सिंह वर्मा जी, शालीमार बाग पश्चिमी, दिल्ली (अपनी धर्मपत्नी की पुण्य स्मृति पर)		2100/–
गुप्त दान – मयूर विहार फेज–1, दिल्ली		1100/–
आर्य समाज अनारकली, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली	मासिक	1000/–
ब्रिगेडियर के.पी. गुप्ता जी, सै.15 ऐ, फरीदाबाद	मासिक	1000/–
आर्य समाज साकेत, नई दिल्ली	मासिक	800/–
आर्य समाज इन्द्रा नगर, बगलौर	मासिक	750/–
श्री नरेन्द्र मोहन वलेचा जी, महामंत्री भारतीय शुद्धि सभा	मासिक	500/–
श्रीमती वासंती चौधरी जी, आर्य महिला आश्रम	मासिक	500/–
डॉ. परमानन्द पांचाल जी, मयूर विहार फेज–1, दिल्ली		300/–
श्रीमती मीना लोधी जी, अणु विहार, कालोनी, नरौरा, बुलन्दशहर		100/–

श्री चन्द्रभान चौधरी जी द्वारा एकत्रित दान

श्री दीपक जी, विकास पुरी, नई दिल्ली		1120/–
कु. गरिमा जी, पश्चिम विहार, नई दिल्ली	मासिक	1000/–
श्रीमती चन्द्रकला राजपाल जी, पश्चिम विहार, नई दिल्ली	मासिक	500/–
डॉ. पुष्पलता वर्मा जी, विकासपुरी, नई दिल्ली		200/–
श्री मिड्ढा फैमिली, विकासपुरी, नई दिल्ली		200/–
श्री खंडेलवाल जी, विकासपुरी, नई दिल्ली		200/–
श्री कर्मवीर मनचन्दा जी, विकासपुरी, नई दिल्ली		100/–
श्री सौरभ चौधरी जी, विकासपुरी, नई दिल्ली		100/–
श्री बाला जी स्टोर, जी.एच.–13 पश्चिम विहार, नई दिल्ली		100/–
श्रीमती प्रवीण मेंदीरत्ता जी, विकासपुरी, नई दिल्ली		200/–
श्रीमती शकुन्तला चड्डा जी, विकासपुरी, नई दिल्ली		50/–

श्री देवराज अरोड़ा जी (फरीदाबाद) द्वारा एकत्रित त्रैमासिक दान

श्री मदन लाल तनेजा जी, सैक्टर–16, फरीदाबाद, हरियाणा	675/–
श्री संजय जी श्री अजय जी अरोड़ा, सैक्टर–16, फरीदाबाद, हरियाणा	500/–
श्री देवराज अरोड़ा जी, सैक्टर–16, फरीदाबाद, हरियाणा	325/–
श्री विजय अरोड़ा जी, टोरे एलटस, सै.–86, फरीदाबाद, हरियाणा	300/–
श्री मदन छाबड़ा जी, मालवीय नगर, नई दिल्ली	300/–
श्री वेद प्रकाश जी, रोहिणी, नई दिल्ली	300/–
श्री सुभाष अरोड़ा जी, सैक्टर–16 फरीदाबाद	225/–
श्री अनिल गुप्ता जी, सैक्टर–16, फरीदाबाद, हरियाणा	225/–
श्री कृष्ण लाल टुटेजा जी, सैक्टर–16, फरीदाबाद, हरियाणा	150/–
श्री सुरेश जी भारत आप्टीकल्ज सैक्टर–16, फरीदाबाद, हरियाणा	150/–
श्री पवन अग्रवाल जी, औमेक्स हाईट्रक्स	150/–

ममतामयी – मानवता की प्रतिमूर्ति– श्रीमती चन्द्रकला राजपाल

श्रीमती चन्द्रकला राजपाल वैदिक संस्कारों की महिला थीं। आर्यसमाज एवं मानवता के प्रति हर पुनीत कार्य में आपका आर्थिक योगदान सुनिश्चित रहता था।

आपके दादा भगत श्री कबीरदास मुल्तान के प्रसिद्ध व्यापारी थे। पति श्री वेदराज वेदालंकार सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान थे। भास्कर कॉलेज के संस्थापक श्री विजय भास्कर आपके सुपुत्र है।

श्रीमती चन्द्रकला राजपाल 18 वर्ष तक आर्य समाज, टेगौर गॉर्डन तथा 10 वर्ष तक आर्य समाज, सुन्दर विहार की प्रधाना रही थी। श्रीमती राजपाल "महिला वेद प्रचार मंडल–दिल्ली की 5 वर्ष तक प्रधाना, 10 वर्षो तक मंत्राणी रही थी।" भटके हुए लोगों, खासकर महिलाओं के लिए वे प्रेरणास्रोत थी। शुद्धि सभा परिवार की ओर से दिवगंत पुण्य आत्मा को विनम्र श्रद्धांजलि!

–चन्द्र भान चौधरी, संरक्षक शुद्धि सभा

शुद्धि संस्कार

माह सितम्बर 2016 में उ.प्र. के एक जिले में शुद्धि सभा दिल्ली की ओर से एक शुद्धि संस्कार कार्यक्रम का आयोजन किया गया इस शुद्धि कार्यक्रम में लगभग 72 की संख्या में स्त्री–पुरुष व बच्चों की शुद्धि की गई। यह लोग पिछले कुछ वर्षो से विधर्मी पादरी के कहने पर विधर्मी मत को मानने लगे थे। शुद्धि कार्य इनके निवास पर किया गया, जिसमें स्थानीय आर्य समाज के मंत्री श्री सुरेश आर्य, श्री सूर्य देव शास्त्री भी सम्मलित हुए। शुद्धि सभा के प्रचारक मटरु लाल एवं श्री शेखर आर्य के प्रयत्न से यह कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

–मटरुलाल प्रचारक

www.thearyasamaj.org

R.N.I. No. 43084/76 Date of Publication 01-10-2016 (pages 8) Delhi Postal R.No. G-3/DL (N) 060/2015-17
Posting Date : 2-3 Every Month

सेवा में,

शुद्धि समाचार

अक्टूबर – 2016

।। वृक्षराज नमस्तुते ।।

पश्यतैनान् महाभागान् परार्थैकान्त् जीवितान् ।
वातवर्षातप हिमान् सहन्ते वारयन्ति नः ।।

–भागवत

देखो, कितने बड़े भाग है इन वृक्षों के जो केवल इसलिए जीते है कि दूसरों का भला हो। कितनी महानता है उनकी कि वे आंधी, वर्षा और दूप की प्रखरता सहते हुए हमारी रक्षा करते हैं।

छायामन्यस्य कुर्वन्ति तिष्ठन्ति स्वयमातपे ।
फलान्यपि परार्थाय वृक्षः सत्पुरुषा इव ।।

–विक्रमचरितम – 65

वृक्ष तो सज्जनों जैसे परोपकारी हैं। स्वयं धूप में खड़े रहते हुए भी वे दूसरों को छाया देते है। उनके फल भी दूसरों के उपयोग के लिये होते हैं।

पत्र–पुष्प–फल–छाया–मूल–वल्कल–दारुभिः
गन्ध निर्यास भस्मास्थि तोक्मैः कामान् वितन्वते ।।

–भागवत

वृक्ष अपने सभी अवयवों से–पतों से, फूलों से, फलो से, छाया से, जड़ों से, छाल से, लकड़ियों से, गन्ध से, गोंद से, कोयले से, और टहिनयों से सबकी कामनायें पूरी करते है।

मंजरिमिः पिक–निकरं
रजोभिरिलनं फलैश्व पान्थगणम्
मार्ग सहकार ! सतत्
उपकुर्वन् नन्दपि चिरकालम्

–उपदेश तरंगगिणी 5, 7, 2

पथ के किनारे खड़े हे वृक्ष ! तुम युग–युग जियो और आनंद–पूर्वक रहो क्योकि तुम अपनी मंजरियों से कोकिलों का, पराग से भ्रगरों का तथा फलों से पथिको का सदा उपकार करते हैं।

दश कूपसभावापी, दसवापी समोहृदः।
दस हृद समः पुत्रो, दस पुत्र समा द्रुमः ।।

– मत्स्यपुराण

दस कुओं के बराबर एक बावड़ी, दस बावड़ियों के बराबर एक तालाब, दस तालाबों के बराबर एक पुत्र और दस पुत्रों के बराबर एक वृक्ष होता है।

इन्धनार्थ यदानीतं अग्निहोत्रं तदुच्यते।
छाया विश्राम पथिकैः पक्षिणां निलयेनव ।।
पत्र मूल त्वगादिभिर्य औषधार्थ तु दूहिनाम् ।
उप कुर्वन्ति वृक्षस्य पंचयज्ञः स उच्यते ।।

–वराहपुराण अ 162–41–42

वृक्षों के पाच उपकार उनके दैनिक पाच महायज्ञ है। व गृहस्यों को ईधन देकर, पथिकों के छाया व विश्राम सील होकर, पक्षियों के नीड़ बनकर तथा पतों, जड़ो व छालों से समस्त जीवों को औषध देकर उनका उपकार करते हैं।

धन्ते भरं कुसुमपत्र फलवनीनां,
धर्मव्यथां वहति शीत भवांरुजं वा।
यो देहम् पर्यति वान्य सुखस्य हेता,
तस्मै वदान्य गुरवे तरवे नमस्ते ।।

–भामिनीविलास प्रा. 89

हे तरुवर ! आप फूलों, पतों और फलों का भार वहन करते हैं, लोगों की धूप की पीड़ा हरते हैं और उनके ठंड के कष्ट मिटाते है। इस प्रकार दूसरों के सुख के लिये आप अपना तन समर्पित कर देते हैं। इन्हीं गुणों से आप उदार पुरुषों के गुरु है। अतः हे तरुवर ! आपको मेरा नमस्कार है।

बहुभिर्वत किं जातैः पुत्रैधर्मार्थ वर्जितः।
वरमेकः पथि तरु पत्र विश्रयते जनः ।।

– उपवन विनोद

बहुत से पुत्र भी हों तो उससे क्या, यदि वे अधर्मी और दरिद्र हों। उनकी अपेक्षा तो पथ का वह वृक्ष ही अच्छा है जिसकी छांव में बैठ पथिकजन विश्राम तो कर लेते हैं।

मूलं ब्रह्मा, त्वचा विष्णुः, शाखा रुद्रोमहेश्वरः।
पातले–पातले देवानाम् वृक्षराज नमस्तुते ।।

हे वृक्षराज ! तुम्हे। नमस्कार है। तुम्हारे भूल में ब्रह्मा, देह में विष्णु, शाखाओं में महेश तथा पत्ते–पत्ते में देवताओं का वास है।

अहों एषां वरं जन्म सर्व प्राण्युपजीवनम्।
सुजनस्येव धन्या महीरुहा येभ्यो निराशायान्ति नार्थितः।।

–भागवत

समस्त प्रणियों को जीवन प्रदान करने वाले इन वृक्षों का जन्म कितना उतम है ! सज्जनों जैसे कितने धन्य हैं वे जिनके पास से कोई याचक निराश नहीं लौटता।

भावपूर्ण श्रद्धांजलि

उरी में शहीद होने वाले वीर जनावों को भारतीय शुद्धि सभा की ओर से भावपूर्ण श्रद्धांजलि। जय हिन्द !

1. सूबेदार करनैल सिंह, 2. हवलदार रवि पॉल, 3. सिपाही राकेश सिंह, 4. सिपाही जावरा मुण्डा 5. सिपाही नैमान कुजूर, 6. सिपाही उवीक जनराव 7. सिपाही एन. एस. रावत 8. सिपाही गणेश शंकर 9. नायक एस.के. विद्यार्थी 10. सिपाही विश्वजीत घोरई 11. लांसनायक जी. शंकर 12. सिपाही जी. दलाई 13. लांसनायक आर.के. यादव 14. सिपाही हरिंदर यादव 15. सिपाही सोमनाथ 16. हवलदार अशोक कुमार 17. सिपाही राजेश सिंह ।

भारत के इन वीर शहीदों को देश का शत्–शत् नमन !!

मुद्रक, व प्रकाशक – रामनाथ सहगल द्वारा गुरमत प्रिंटिंग प्रेस, 1337, संगतरासन, पहाड़ गंज, नई दिल्ली–55 दूरभाष : 23561625, से मुद्रित एवं भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा, 6949, बिड़ला लाइन दिल्ली–7 दूरभाष : 23857244 से प्रकाशित। सम्पादक : डॉ. कैलाश चन्द्र शास्त्री सह. सम्पादक – देवेश प्रकाश शास्त्री